ग़लत फ़हमियाँ

ग़लत फ़हमियाँ

विक्लिफ़ ए. सिंघ

ġhalat-fahmiyāṅ

Misconceptions

by W.A. Singh; rev. by D. Becht

(Urdu—Hindi script)

© 2019 MIK

published and printed by

Good Word, New Delhi

for enquiries or to request more copies:

askandanswer786@gmail.com

अर्ज़

ईसाई मज़हब के बारे में काफ़ी ग़लतफ़हमियाँ पाई जाती हैं। इस किताबचे में चंद एक को दूर करने की कोशिश की गई है। अर्ज़ है कि क़ारी संजीदगी से इस पर ग़ौर करें। हमें यक़ीन है कि जो ग़ैर-जानिबदाराना नज़र से इसका मुतालआा करे उस पर तमाम सच्चाई रोज़े-रौशन की तरह ज़ाहिर हो जाएगी।

1

पहली ग़लतफ़हमी

ईसाइयत एक ग़ैरमुल्की मज़हब है यानी यूरोप से आया है।

तारीख़ के औराक़ से ज़ाहिर है कि कुल अंबियाए-कराम एशिया में पैदा हुए। हुज़ूर अल-मसीह मशरिक़े-वुस्ता के मुल्क फ़लस्तीन में पैदा हुए थे। आपने अपने शागिर्दों को हुक्म दिया कि वह तमाम दुनिया में इंजील जलील का जाँफ़िज़ा पैग़ाम पहुँचाएँ। आपने उनसे फ़रमाया कि

> पूरी दुनिया में जाकर तमाम मख़लूक़ात को अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुनाओ।
> (इंजीले-जलील, मरक़ुस 16:15)

चुनाँचे शागिर्द दुनिया के कोने कोने में फैल गए। लोग जौक़-दर-जौक़ ईमान लाए। न सिर्फ़ मग़रिबी ममालिक के लोग ईमान लाए बल्कि मशरिक़ी ममालिक मसलन तुरकी, इराक़, ईरान, मिसर, हिंदुस्तान, चीन और अफ़्रीक़ा में भी मुतअद्दिद जमातें क़ायम हुईं।

ऐसा मालूम होता है कि बरे-सग़ीर में ईसाइयत का सेहरा हुज़ूर अल-मसीह के शागिर्द हज़रत तोमा के सर है। रिवायत है कि वह पहली सदी ईसवी में हिंदुस्तान तशरीफ़ लाए और मुतअद्दिद जमातें क़ायम किं। आख़िर में उन्होंने चेन्नई के क़रीब शहादत पाई। हम वुसूक़ से कह सकते हैं कि पहली सदी ईसवी में हिंदुस्तान में हज़रत ईसा के पैरोकार आबाद थे और कि वहाँ जमातें पाई जाती थीं।

ग़ालिबन इस ग़लतफ़हमी की वजह यह है कि जब अंग्रेज़ों ने हिंदुस्तान पर क़ब्ज़ा किया तो उन्होंने भी अपने मज़हब की तबलीग़ शुरू कर दी। तब लोगों के दिलों में यह ख़याल पैदा हुआ कि हिंदो-पाक में ईसाइयत अंग्रेज़ों की तरफ़ से है। लेकिन यह ख़याल हक़ायक़ और तारीख़ की रौशनी में सरासर ग़लत है। ईसाइयत एशियाई मज़हब है, और हिंदुस्तान में हज़रत ईसा पर ईमान की जड़ें यूरोपी अक़वाम की आमद से सदियों पेशतर मौजूद थीं।

2

दूसरी ग़लतफ़हमी

> वह तमाम लोग जो ईसाई कहलाते हैं हुज़ूर अल-मसीह के शागिर्द हैं।

लाज़िम नहीं कि जो ईसाई कहलाए वह दर-हक़ीक़त हज़रत ईसा का पैरोकार हो। सच्चा ईसाई वही है जो इंजील जलील के पैग़ाम पर ईमान लाकर उस पर अमल करता है। ऐसे शख़्स ने यह क़बूल किया है कि हुज़ूर अल-मसीह मुझ जैसे गुनाहगार को नजात देने के लिए इस दुनिया में आए। यह क़बूल करने के बाद उसकी ज़िंदगी में तबदीलियाँ आती हैं। पहले वह गुनाह से प्यार

करता था, मगर अब वह उससे बचने की कोशिश करता है। बेशक उससे गुनाह सरज़द तो होता है, लेकिन अब वह अल्लाह तआला से उसकी माफ़ी माँगता है और आइंदा उससे बचने का अहद करता है। पहले वह अल्लाह तआला की इबादत तो करता था, मगर फ़रज़ समझते हुए। अब वह दिलो-जान से उसकी परस्तिश करता, उससे सच्ची मुहब्बत रखता और इसका इज़हार अपने चाल-चलन से करता है। अब वह बदी के एवज़ बदी नहीं करता बल्कि नेकी के दरपै रहता है। हुज़ूर अल-मसीह के सच्चे शागिर्दों की यही निशानी है।

अकसर लोग जो ईसाई कहलाते हैं दर-हक़ीक़त ईसाई नहीं हैं। उनकी बुरी और गुनाहआलूद ज़िंदगियों से ज़ाहिर होता है कि उनका हुज़ूर अल-मसीह से कोई ताल्लुक़ नहीं। वह हुज़ूर अल-मसीह के शागिर्द हरगिज़ नहीं हो सकते। लाज़िम है कि हम हक़ीक़ी ईसाइयों में जो कि तादाद में थोड़े हैं और नाम-निहाद ईसाइयों में इम्तियाज़ करें चाहे वह यूरोपियन, अमरीकन या हिंदो-पाक के बाशिंदे ही क्यों न हों।

3

तीसरी ग़लतफ़हमी

> किताबे-मुक़द्दस में तहरीफ़ और रद्दो-बदल हो चुका है, यहाँ तक कि वह असल किताबे-मुक़द्दस नहीं रही जो अल्लाह तआला ने आसमान से नाज़िल की थी।

किताबे-मुक़द्दस में किसी क़िस्म की तहरीफ़ नहीं की गई और न इसकी कोई इजाज़त ही है। अलबत्ता सहवे-कातिब का इमकान हो सकता है जो हर एक किताब में पाया जाता है ख़्वाह वह आसमानी हो या दुनियावी। हम इतने वुसूक़ के साथ यह क्यों कह सकते हैं?

कलामे-मुक़द्दस में तहरीफ़ की सख़्त मुमानअत

कोई भी यहूदी या ईसाई तहरीफ़ की जुर्रत नहीं कर सकता, क्योंकि तौरेत सख़्ती से फ़रमाती है कि

> जो अहकाम मैं तुम्हें सिखाता हूँ उन में न किसी बात का इज़ाफ़ा करो और न उनसे कोई बात निकालो।
> (इस्तिसना 4:2)

सदियों बाद हज़रत सुलेमान फ़रमाते हैं,

> उसकी बातों में इज़ाफ़ा मत कर, वरना वह तुझे डाँटेगा और तू झूटा ठहरेगा।
> (सहायफ़े-हिकमतो-ज़बूर, अमसाल 30:6)

और यसायाह नबी फ़रमाते हैं,

> तमाम इनसान घास ही हैं, उनकी तमाम शानो-शौकत जंगली फूल की मानिंद है। ...लेकिन हमारे ख़ुदा का कलाम अबद तक क़ायम रहता है।
> (यसायाह 40:6-8)

हुज़ूर अल-मसीह ने ख़ुद फ़रमाया कि

> आसमानो-ज़मीन तो जाते रहेंगे, लेकिन मेरी बातें हमेशा तक क़ायम रहेंगी। (मत्ती 24:35)

और इंजील जलील के आख़िर में तंबीह की जाती है कि

> अगर कोई इस किताब में किसी भी बात का इज़ाफ़ा करे तो अल्लाह उसकी ज़िंदगी में उन बलाओं का इज़ाफ़ा करेगा जो इस किताब में बयान की गई हैं। और अगर कोई नबुव्वत की इस किताब से बातें निकाले तो अल्लाह उससे किताब में मज़कूर ज़िंदगी के दरख़्त के फल से खाने और मुक़द्दस शहर में रहने का हक़ छीन लेगा।
> (मुकाशफ़ा 22:18-19)

कुरान शरीफ़ भी किताबे-मुक़द्दस के हमज़बान होकर एलान करता है कि

> وَلا مُبَدِّلَ لِكَلِماتِ اللَّهِ
> कोई बदलनेवाला नहीं उसकी बातें
> (सूरा अल-इनाम आयत 34)

और

> لا تَبديلَ لِكَلِماتِ اللّٰهِ
>
> अल्लाह की बातें बदलती नहीं।
>
> (सूरा यूनुस आयत 64)

इन फ़रमूदात के पेशे-नज़र क्या कोई इनसान अल्लाह तआला के कलाम को बदल सकता है?

ख़ाला की मिसाल

नुसख़ों की सेहत को समझने के लिए फ़रज़ करो कि आपकी ख़ाला ने एक आला क़िस्म की मिठाई ईजाद की हो। वह ख़ुशी से फूले न समाती बल्कि इसका नुसख़ा हाथ से लिखकर अपनी तीन सहेलियों को भेज देती है।

कुछ महीनों के बाद ख़ाला बेटे की सालगिरह पर मिठाई बनाना चाहती है। जब मिठाई का नुसख़ा निकालती है तो उसे सदमा पहुँचता है : दीमक नुसख़े के अकसर हिस्से को खा गई है। ख़ाला कहती है, “कोई बात नहीं, मैं अपनी सहेलियों से नुसख़ा मंगवाती हूँ।” अफ़सोस, जवाब मिलता है कि सबकी सब नक़लें गुम हो गई हैं।

लेकिन सहेलियाँ उसे तसल्ली देकर कहती हैं, “फ़िकर मत करो। हम तीनों ने नुसख़े को नक़ल करके अपने वाक़िफ़कारों में तक़सीम किया है। उन्हीं से हम यह नक़लें जमा करेंगी।”

मिल मिलाकर 25 नुसख़े इकट्ठे होते हैं। अब जब सहेलियाँ इनका एक दूसरे के साथ मुक़ाबला करती हैं तो पता चलता है कि सिर्फ़ 22 नुसख़े एक जैसे हैं। 3 में थोड़ा-बहुत फ़रक़ आ गया है : एक में “मिक्स करके पीसना” जब कि दूसरे में “पीसकर मिक्स करना” लिखा है। तीसरे में एक और मसाले का इज़ाफ़ा किया गया है।

अब ख़ाला क्या करेगी? क्या वह असल नुसख़ा मालूम कर सकेगी? बेशक। क्योंकि वह नुसख़ों का मुक़ाबला करके तबदील-शुदा नुसख़ों को ठीक कर सकती है।

मजमुई तौर पर आलिमों ने यही तरीक़ा किताबे-मुक़द्दस के क़दीम नुसख़ों पर ग़ौर करते वक़्त किया। उन्होंने सायंस के उसूलों की बिना पर इन लातादाद नुसख़ों का एक दूसरे के साथ मुक़ाबला करके असल मतन की शक्ल यक़ीनी बना लिया है।

नुसख़ों की तादाद और क़दामत

हम किसी नुसख़े की असल शक्ल किस तरह मालूम कर सकते हैं? यह मालूम करना दो बातों पर मबनी होता है।

- नक़ल किए गए नुसख़ों की क्या तादाद है? क्या 2 या 100 नुसख़े मौजूद हैं? जितने ज़्यादा नुसख़े हैं उतना ही आसानी से असल का पता लगा सकते हैं।
- नुसख़े कितने पुराने हैं? ज़ाहिर है कि जो नुसख़े असल के ऐन बाद वुजूद में आए, वह सबसे क़ाबिले-एतबार हैं।

ग़रज़, जितने क़दीम और तादाद में ज़्यादा नुसख़े होते हैं उतने ही आसानी से असल का पता लगाया जा सकता है।

दीगर तारीख़ी नुसख़ों की हालत

क़दीम ज़माने के जो तारीख़ी नुसख़े मौजूद हैं उनकी क्या हालत है? अकसर किताबों के नुसख़े थोड़े ही हैं, और जो तारीख़ी नुसख़े मौजूदा ज़माने में मिलते हैं वह कई सदियों के बाद मरक़ूम हुए। यों योसीफ़स की तारीख़ “यहूदी जंग”[1] के सिर्फ़ 9 मुकम्मल

[1] Josephus, *The Jewish War.*

नुसख़े हैं, और वह 4 सदियों के बाद ही मरक़ूम हुए।[1] कई एक क़दीम तारीख़ी किताबों के सिर्फ़ चंद एक नुसख़े दस्तयाब हुए हैं और वह भी हज़ार साल के बाद ही लिखे गए, मसलन हिरोडोटस की तारीख़[2] (10 नुसख़े), जूलियस सीज़र की तारीख़ “गाल की जंगें” (8 नुसख़े) वग़ैरा।[3] तो भी उलमा इनको क़ाबिले-एतबार समझते हैं।

इंजील जलील की सेहत

क़दीम नुसख़ों की तसदीक़

इन के मुक़ाबले में इंजील शरीफ़ के नुसख़ों की तादाद हैरतअंगेज़ है। हाल ही में क़दीम ज़माने के 5,686 अलग अलग यूनानी नुसख़े मौजूद हैं।[4] इन में से तीन नुसख़े मरकज़ी अहमियत रखते

[1] Paul Barnett, *Is the New Testament History?* (Ann Arbor, 1986), 45.

[2] Herodotus, *History.*

[3] Julius Caesar, *Gallic Wars*; Metzger, B.M., *The Text of the New Testament* (New York/Oxford,1968), 16f;34.

[4] N. Geisler/P. Bocchino, *Unshakeable Foundations*, (Minneapolis [MN], 2001) p. 256.

हैं : नुसख़ाए-इस्कंदरिया[1] पाँचवीं सदी के शुरू में, नुसख़ाए-सीना[2] 340 ई. में और नुसख़ाए-वैटिकन[3] 325-350 ई. में वुजूद में आया।

लेकिन कुछ नुसख़े इन मजमुओं से भी क़दीम हैं। चेस्टर बीटी पापायरस जिस में इंजील जलील का अकसर हिस्सा शामिल है 250 ई. में मरक़ूम हुआ।[4] बाडमर पापायरस में यूहन्ना की इंजील का अकसर हिस्सा 200 ई. में या इससे क़बल मरक़ूम हुआ।[5] क़दीम नुसख़ों में से एक अहम गवाह मिसर का रायलैंडज़ पापायरस नंबर 457 है। यूहन्ना 18:31-33 का यह टुकड़ा तक़रीबन 117 ई. में मरक़ूम हुआ।[6]

मतलब है कि यूहन्ना की इंजील की तसनीफ़ के ज़्यादा से ज़्यादा 30 साल बाद यह इंजील कम अज़ कम मिसर तक पहुँच गई थी।

ग़रज़ क़दीम ज़माने की दीगर तसानीफ़ की निसबत नुसख़ों की तादाद और क़दामत निहायत हैरतअंगेज़ है। लेकिन इन गवाहों के अलावा हाल की किताबे-मुक़द्दस की क़ाबिले-एतबार हालत दो और तरीक़ों से साबित हुई है।

---

[1] Codex Alexandrinus.

[2] Codex Sinaiticus; Geisler/Nix, 392.

[3] Codex Vaticanus; Geisler/Nix, 391.

[4] Chester Beatty Papyrus II; Geisler/Nix, 389f.

[5] Bodmer Papyrus II; Metzger, 39f.

[6] Rylands Papyrus 457; Geisler/Nix, 388.

क़दीम तरजुमों की तसदीक़

इब्तिदा ही में किताबे-मुक़द्दस का तरजुमा लातीनी, क़ुबती, अरामी, आरमीनियाई और जारजियाई वग़ैरा ज़बानों में हुआ। इनके आज तक 19,000 से ज़ायद क़दीम नुसख़े मौजूद हैं।

इब्तिदाई बुज़ुर्गों की तसदीक़

न सिर्फ़ यह बल्कि क़दीम जमातों के बुज़ुर्गों ने जो किताबें लिखीं उन में बहुत सारे हवालाजात पाए जाते हैं।[1] इतने हैं कि अगर किताबे-मुक़द्दस के तमाम नुसख़े न होते तो हम तक़रीबन पूरी इंजील जलील को इन हवालाजात से मरक़ूम कर सकते।[2]

तौरेतो-ज़बूर की सेहत

क़दीम नुसख़ों की तसदीक़

इस तरह इंजील जलील से पहले लिखे गए सहायफ़ भी सो फ़ी सद क़ाबिले-एतबार हैं। दुनिया की मुख़तलिफ़ लाइब्रेरियों और अजायबख़ानों में 10,000 से ज़ायद क़दीम नुसख़े महफ़ूज़ हैं जो

[1] Barnett, 44; 46f.
[2] Metzger, 86.

500 ई. से लेकर 1000 ई. तक मरक़ूम हुए। सबसे पुराने नुसख़े बहीराए-मुरदार के क़रीब पाए गए। यह क़दीमतरीन नुसख़े 300 क़बल अज़ मसीह से लेकर 100 ई. तक मरक़ूम हुए। इन में आस्तर की किताब के सिवा तौरेत, तारीख़ी सहायफ़, हिकमतो-ज़बूर के सहायफ़ और सहायफ़े-अंबिया की तमाम किताबों का कोई न कोई हिस्सा शामिल है। हैरानकुन बात यह है कि यसायाह नबी की पूरी किताब का नुसख़ा लफ़्ज़ बलफ़्ज़ आज के मतन से मिलता जुलता है। सिर्फ़ 5 फ़ी सद का फ़रक़ है, और वह भी सिर्फ़ सहवे-कातिब और इमला का फ़रक़; मानी में कोई फ़रक़ नहीं।

हफ़्तादी तरजुमे की तसदीक़

एक और अहम गवाह इन सहायफ़ का यूनानी तरजुमा बनाम हफ़्तादी तरजुमा है जो तीसरी सदी क़बल अज़ मसीह से शुरू हुआ और दूसरी सदी क़बल अज़ मसीह मुकम्मल हुआ। इसके भी बहुत-से क़दीम नुसख़े क़ायम रहे हैं। एक बनाम रायलैंडज़ पापायरस नंबर 486[1] दूसरी सदी क़बल अज़ मसीह में मरक़ूम हुआ।

यह तरजुमा इबरानी मतन की तसदीक़ करता है, क्योंकि उस में और इबरानी असल में थोड़ा ही फ़रक़ नज़र आता है।

[1]Rylands Papyrus 486

इब्तिदाई बुज़ुर्गों की तसदीक़

इस तरजुमे के लातादाद हवालजात इब्तिदाई बुज़ुर्गों की किताबों में भी पाए जाते हैं। ग़रज़ इस क़दीम तरजुमे से भी इन सहायफ़ की क़दामत और सेहत साबित हुई है।

इन लातादाद क़दीम नुसख़ों की बिना पर हम यक़ीन से कह सकते हैं कि किताबे-मुक़द्दस की मौजूदा सूरत क़ाबिले-एतबार है।

किताबे-मुक़द्दस के यह नुसख़े आसारे-क़दीमा की खुदाई के दौरान मशरिक़े-वुस्ता के मुख़तलिफ़ ममालिक से मिले हैं और अब मुख़तलिफ़ ममालिक की लाइब्रेरियों और अजायबख़ानों में महफ़ूज़ हैं। यह नुसख़े मजमुई तौर पर इस बात के ज़िंदा गवाह हैं कि किताबे-मुक़द्दस तहरीफ़ो-तख़रीब से क़तअन पाक है।

अगर तहरीफ़ हुई होती तो ...

अगर फ़रज़ भी करें कि तहरीफ़ की गई होती तो सवाल यह है कि यह नाम-निहाद तबदीली किससे सरज़द हुई, कब हुई, क्यों हुई, कहाँ हुई और क्योंकर हुई?

कौन?

सबसे पहला सवाल यह है कि वह कौन हैं जो ऐसे बड़े जुर्म के मुरतकिब हुए? उमूमन बताया जाता है कि यहूदियों और ईसाइयों ने मिलकर यह काम किया। लेकिन क्या यह हो सकता है कि दो ऐसे मुख़ालिफ़ फ़िरके बाहम मिलकर कलामु-ल्लाह में रद्दो-बदल करें? अगर इत्तफ़ाक़ुर-राए से नहीं बल्कि अपनी अपनी तरफ़ से ऐसा काम किया तो तारीख़ इस बारे में क्यों ख़ामोश है? अगर ऐसा होता तो यह लाज़िमी था कि यह दोनों फ़िरके एक दूसरे को नीचा दिखाने के लिए एक दूसरे की बेईमानी ज़ाहिर करते।

अगरचे हुज़ूर अल-मसीह ने कुछ यहूदियों की मुनाफ़क़त को ख़ूब बेनिक़ाब किया (मसलन मत्ती बाब 23) तो भी आपने उन पर यह इलज़ाम कभी नहीं लगाया कि उन्होंने किताबे-मुक़द्दस में रद्दो-बदल किया है। इसके बरअक्स आपने बार बार फ़रमाया कि वह इन्हीं नविश्तों की तरफ़ रुजू लाएँ।

अब बाक़ी रही ईसाई क़ौम, तो क्या यह मुमकिन है कि ईसाई अल्लाह तआला की वाज़िह तंबीह के बावुजूद भी कलामु-ल्लाह में तहरीफ़ की जुर्रत कर सकें? क्या वह इतने ही बेईमान और कजरौ हैं कि जान-बूझकर पाक नविश्तों को बिगाड़ें? यह बात बिलकुल क़ाबिले-तसव्वुर नहीं है कि एक शख़्स जिस किताब को

मिनजानिबु-ल्लाह मानता और उस पर ईमान रखता हो, उसी में तहरीफ़ो-तबद्दुल भी करे !!!

कब?

लेकिन कोई यह काम कर भी गया हो तो फिर यह सवाल उठेगा कि तहरीफ़ कब हुई? क्या किताबे-मुक़द्दस आमदे-इसलाम से पहले मुहर्रफ़ हो चुकी थी या बाद में हो गई? अगर तहरीफ़ आमदे-इसलाम से पहले हुई होती तो कुरान शरीफ़ एक मुहर्रफ़ किताब की तसदीक़ करता। इसके बरअक्स कुरान शरीफ़ अहले-इसलाम को तलक़ीन करता है कि

> فَإِن كُنتَ فِي شَكٍّ مِمّا أَنزَلنا إِلَيكَ فَاسأَلِ الَّذينَ يَقرَءونَ الكِتابَ مِن قَبلِكَ ۚ لَقَد جاءَكَ الحَقُّ مِن رَبِّكَ فَلا تَكونَنَّ مِنَ المُمتَرينَ
>
> अब अगर तुझे उस हिदायत की तरफ़ से कुछ भी शक हो जो हमने तुझ पर नाज़िल की है तो उन लोगों से पूछ ले जो पहले से किताब पढ़ रहे हैं फ़िल-वाकि यह तेरे पास हक़ ही आया है तेरे रब की तरफ़ से, लिहाज़ा तू शक करनेवालों में से न हो। (सूरा यूनुस आयत 94)

ग़रज़, साबित है कि आमदे-इसलाम के ज़माने में किताबे-मुक़द्दस हर क़िस्म की तहरीफ़ से पाक थी।

बाक़ी रहा यह इमकान कि शायद आमदे-इसलाम के बाद तहरीफ़ हुई हो तो अर्ज़ है कि दुनिया के मुख़तलिफ़ अजायबघरों में किताबे-मुक़द्दस के एक नहीं सैंकड़ों नुसख़े असल ज़बान में इस वक़्त मौजूद हैं। किताबे-मुक़द्दस के तमाम तरजुमे इन्हीं पुराने नुसख़ाजात पर मबनी हैं। चुनाँचे हम लाज़िमन इस नतीजे पर पहुँचते हैं कि किताबे-मुक़द्दस अपनी असल हालत में अब तक मौजूद है।

क्यों?

यह सवाल भी क़ाबिले-ग़ौर है कि तहरीफ़ करने से यहूदियों और ईसाइयों ने क्या उल्लू सीधा करना चाहा? वह काम जिसका उन पर इलज़ाम लगाया जाता है उन्होंने क्यों किया? इसके मुख़तलिफ़ जवाब दिए जाते हैं, लेकिन अकसर यह कहा जाता है कि उन्होंने कुरान शरीफ़ की बिशारत को अपने नविश्तों से मिटाने की ख़ातिर यह काम किया।

लेकिन क्या यह बात तसलीम करने के क़ाबिल है कि कोई गुरोह जिसका मक़सद सिर्फ़ यही था कि इस क़िस्म के हवालाजात और इशारे मिटा डाले, इतना कच्चा काम करता कि उन हवालाजात

को बाक़ी रहने देता जिनका हवाला अब तक अहले-इसलाम देते हैं? ज़ाहिर है कि इस दावा का हक़ीक़त से कुछ वास्ता नहीं। अगर ईसाइयों या यहूदियों का यह मक़सद होता तो वह मुकम्मल तौर पर अपना काम कर जाते और यों इस उलझन से बचे रहते।

कहाँ?

लेकिन अगर यह दावा मान भी लिया जाए कि किताबे-मुक़द्दस में तहरीफ़ हो चुकी है तो क्या मुनासिब नहीं कि किताबे-मुक़द्दस का वह असल नुसख़ा दिखाया जाए? हक़ीक़त तो यह है कि इस क़िस्म का कोई मुस्तनद नुसख़ा मौजूद ही नहीं।

दर-असल हुज़ूर अल-मसीह पर कोई इंजील नाज़िल ही नहीं हुई जैसा कि अहले-इसलाम में मशहूर है और न आपने कोई इंजील तहरीर की या लिखवाई। आप तो ख़ुद मुजस्सम कलाम थे, और आपका हर लफ़्ज़ वही (وحی) का दर्जा रखता है। शागिर्दों ने आपके फ़रमूदात और तालीमात को उस ज़माने की अदबी और आलमगीर ज़बान यूनानी में लिखा। हमारे पास उन्हीं इब्तिदाई यूनानी मख़तूतात की नक़लें और तरजुमे हैं।

यही हाल अहले-इसलाम का भी है। इब्तिदा में जिन हड्डियों, पत्थरों, पतों और चमड़े के पारचाजात पर कुरान शरीफ़ लिखा गया था वह अब नापैद हैं। मुरव्वजा कुरान उन्हीं से नक़ल किया

गया है। मुख़तसरन यह कि ईसाइयों और मुसलमानों दोनों का इनहिसार उन असल और इब्तिदाई किताबों की महज़ नक़ल पर है। लिहाज़ा किसी मुसलमान का यह दावा कि इंजीले-मुक़द्दस में फ़ुलाँ फ़ुलाँ आयत ऐसी नहीं बल्कि इस तरह है या फ़ुलाँ लफ़्ज़ ऐसा नहीं इस तरह है बिलकुल बेमानी है क्योंकि उसके पास भी सिर्फ़ इंजील की वह शक्ल है जो सबके पास है।

क्योंकर?

निहायत अहम सवाल यह भी है कि अगर तौरेतो-इंजील वग़ैरा हक़ तआला का कलाम हैं तो क़ादिरे-मुतलक़ ख़ुदा ने अपने लातबदील कलाम को क्योंकर मुहर्रफ़ होने दिया? क्या यह बात मुमकिनात में से हो सकती है कि जो बात मुसलमान फ़ख़रिया तौर से नामुमकिन क़रार देते हैं, यहूदियों और ईसाइयों ने कर दी? क्या दुनिया के ख़ालिक़ो-मालिक ख़ुदाए-ज़ुलजलाल ने ईसाइयों और यहूदियों के हाथों (नऊज़ बिल्लाह) शिकस्त खाई? क्या वह इतने होशियार और चालाक साबित हुए कि उन्होंने पाक कलाम के मुहाफ़िज़े-आला को तहरीफ़ की उलझन में डाल दिया? ऐसे कुफ़रआमेज़ नतीजे से तो हमारे मोतरिज़ीन भी झिजकते होंगे!

कुरान शरीफ़ के क़दीम नुसख़े क्यों नज़रबंद?

आख़िर में हम अहले-इसलाम से भी एक सवाल पूछना चाहते हैं। किताबे-मुक़द्दस के तमाम नुसख़े शाया हुए हैं। हर एक उनको परखकर अपना अपना नतीजा निकाल सकता है, चाहे वह हिंदू हो या मुसलिम। इसके उलट कुरान शरीफ़ के क़दीम नुसख़े नज़रबंद रखे गए हैं, और किसी को उनका जायज़ा लेने की इजाज़त नहीं। इस्तंबुल के तोपकापी महल में पड़ा कुरान का क़दीम नुसख़ा क्यों किसी को दिखाया नहीं जाता? कुरान शरीफ़ के जो क़दीम नुसख़े ताशक़ंद, अल-क़ाहिरा और दमिश्क़ में मौजूद हैं उनको अवाम को क्यों दिखाए नहीं जाते? क्या वजह है कि आज तक उलमा को उनका जायज़ा लेने की इजाज़त नहीं?

4

चौथी ग़लतफ़हमी

ईसाई तीन ख़ुदाओं को मानते हैं।

हज़रत ईसा के पैरोकार हरगिज़ हरगिज़ तीन ख़ुदाओं को नहीं मानते। वह ख़ुदाए-वाहिद की जो तमाम जहान का ख़ालिक़ो-मालिक है परस्तिश करते हैं। यों तौरेत शरीफ़ में लिखा है,

> तुझे यह सब कुछ दिखाया गया ताकि तू जान ले कि रब ख़ुदा है। उसके सिवा कोई और नहीं है।
>
> (इस्तिसना 4:35। देखिए इंजीले-जलील
> 1 तीमुथियुस 2:5)

अलबत्ता हम ज़ाते-ख़ुदा में तीन अक़ानीम बाप, फ़रज़ंद और रूहुल-क़ुद्स के क़ायल हैं।

अल्लाह तआला के बारे में इल्म हासिल करने के दो ज़राए हैं। एक उसकी तख़लीक़ है, क्योंकि हर तख़लीक़ अपने ख़ालिक़ की तरफ़ इशारा करती है। दूसरा उसका कलाम है। यह सबसे मुहकम ज़रीअ है। आइए हम इन दोनों ज़राए पर ग़ौर करके मालूम करें कि अल्लाह तआला की ज़ात कैसी है।

तख़लीक़ से दलायल

हर बनी हुई चीज़ में उसके बनानेवाले की झलक नज़र आती है। दूसरे लफ़्ज़ों में हम मख़लूक़ को देखकर अंदाज़ा लगा सकते हैं कि उसका ख़ालिक़ कैसा है। मसलन अगर आप ग़ालिब के मुताल्लिक़ जानना चाहें तो आप क्या करेंगे? आप उनकी तमाम तसानीफ़ को पढ़ेंगे। इनसे उनके बारे में बहुत कुछ पता चलेगा। इसी तरह अगर हम अल्लाह तआला के मुताल्लिक़ जानना चाहें तो उसकी तख़लीक़ पर ग़ौर करने से उसकी झलक नज़र आएगी। यों लिखा है,

> जो कुछ अल्लाह के बारे में मालूम हो सकता है वह तो उन पर ज़ाहिर है, हाँ अल्लाह ने ख़ुद यह उन पर ज़ाहिर किया है। क्योंकि दुनिया की तख़लीक़ से लेकर आज तक इनसान अल्लाह की अनदेखी फ़ितरत यानी उसकी अज़ली क़ुदरत और उलूहियत मख़लूक़ात का मुशाहदा करने से पहचान सकता है। (इंजीले-मुनव्वरा, रोमियों 1:19-20)

सूरज

हक़ तआला की एक आला तख़लीक़ सूरज है जिसका हर शख़्स हर रोज़ मुशाहदा और तजरबा करता है। आफ़ताब वाहिद है, लेकिन उस में कसरत पाई जाती है। पहले, उस में रौशनी है जो तमाम जहान को मुनव्वर करती है। दूसरे, उस में गरमी या क़ुव्वत है जो ज़िंदगी बख़्शती है। इसके बग़ैर किसी ज़िंदगी का बहाल रहना नामुमकिन है। तीसरे, रौशनी और गरमी के पीछे कोई शै है जिसे सूरज कहते हैं। यह तीनों एक हैं और अलहदा नहीं। यह उसके ज़ाती जौहर हैं, और उनके बाहमी इत्तहाद से वह सूरज कहलाया। अगरचे यह जौहर बाहम ऐसे पैवस्त हैं कि इनको एक दूसरे से जुदा नहीं किया जा सकता, ताहम यह अपना अलग अलग इज़हार करते हैं। अगर इन में से एक भी शामिले-हाल न हो तो

सूरज अपनी ज़ात में नामुकम्मल है बल्कि आफ़ताब कहलाने का हक़दार भी नहीं। ग़रज़ साबित है कि सूरज भी तसलीसे-ज़ाती के बग़ैर कामिल नहीं।

इनसान

मगर शायद यह मिसाल अल्लाह तबारक-ओ तआला के बारे में इतनी मौज़ूँ नहीं,क्योंकि वह ज़ी-हयात है जब कि सूरज में ज़िंदगी नहीं। ग़ालिबन इनसान की मिसाल जो कि अल्लाह तआला की सबसे आला तख़लीक़ है इसे बेहतर तौर पर बयान करती है। इनसान वाहिद है, लेकिन वह रूह, जिस्म और जान पर मुश्तमिल है। अगर उन्हें अलग अलग करने की कोशिश की जाए तो ज़िंदगी से हाथ धोने पड़ेंगे। क्या रूह इनसान है? क्या जान इनसान है? क्या बदन इनसान है? नहीं, यह सब मिलकर इनसान बनता है। एक में तीन हैं और तीन में एक। वहदत में कसरत और कसरत में वहदत।

ऐसी मुतअद्दिद मिसालें पेश की जा सकती हैं और अगरचे यह ज़ाते-बारी तआला को पूरे तौर पर बयान तो नहीं करतीं तो भी इनसे उसकी ज़ाते-अक़दस को समझने में मदद मिल सकती है। ग़रज़, अगर अल्लाह तआला की तख़लीक़ में कसरत है तो यह ऐन क़ाबिले-तसव्वुर है कि ख़ालिक़ की वहदत में भी कसरत है।

कलामे-ख़ुदा से दलायल

जब तौहीद पर इतना ज़ोर दिया गया है तो हम क्यों तसलीस फ़ित-तौहीद पर ईमान रखते हैं? तसलीस फ़ित-तौहीद के अक़ीदे की बुनियाद कलामे-पाक है। मुलाहज़ा फ़रमाएँ :

> मैं ही वही हूँ। मैं ही अव्वलो-आख़िर हूँ। ...और अब रब क़ादिरे-मुतलक़ और उसके रूह ने मुझे भेजा है। (सहायफ़े-अंबिया, यसायाह 48:12,16)

तौरेत, ज़बूर और सहायफ़े-अंबिया में तसलीस फ़ित-तौहीद को इशारतन बयान किया गया है, लेकिन इंजील में इसे साफ़ तौर से ज़ाहिर किया गया है। मसलन हुज़ूर अल-मसीह के बपतिस्मे के वक़्त आप पर रूह कबूतर की शक्ल में नाज़िल हुआ और बाप की आवाज़ सुनाई दी कि

> यह मेरा प्यारा फ़रज़ंद है।
> (इंजीले-जलील, मत्ती 3:16-17)

और जी उठने के बाद आपने अपने शागिर्दों को हुक्म दिया कि ईमान लानेवालों को

> बाप, फ़रज़ंद और रूहुल-क़ुद्स के नाम से बपतिस्मा दो। (मत्ती 28:19)

ग़ौर करें कि यहाँ “नामों” से नहीं बल्कि “नाम” से बपतिस्मा देने को कहा गया है। इससे भी ज़ाहिर होता है कि ख़ुदाए-वाहिद में कसरत है।

इंजील के बहुत-से हवालजात इसकी तसदीक़ करते हैं। मसलन

- बाप ख़ुदा है

  यूहन्ना 6:27; रोमियों 1:7; 1 पतरस 1:2

- फ़रज़ंद ख़ुदा है

  यूहन्ना 1:1,14; कुलुस्सियों 2:9; इबरानियों 1:8; यूहन्ना 5:19-23

- रूहुल-क़ुद्स ख़ुदा है

  आमाल 5:3-4; 1 कुरिंथियों 3:16; 1 पतरस 1:2

ग़रज़ हम अपने मुशाहदे और किताबे-मुक़द्दस की तालीम की बुनियाद पर ही यह ईमान रखते हैं कि ज़ाते-बारी तआला की वहदत में कसरत है।

तसलीस का राज़

बेशक महदूद इनसान, ला-महदूद ख़ुदा की ज़ाते-अक़दस को पूरे तौर पर समझने से क़ासिर है। यों लिखा है,

> क्या तू अल्लाह का राज़ खोल सकता है? क्या तू क़ादिरे-मुतलक़ के कामिल इल्म तक पहुँच सकता है? वह तो आसमान से बुलंद है, चुनाँचे तू क्या कर सकता है? वह पाताल से गहरा है, चुनाँचे तू क्या जान सकता है?
> (सहायफ़े-हिकमतो-ज़बूर, ऐयूब 11:7-8)

इनसान, अल्लाह तआला के बारे में सिर्फ़ उतना ही जान सकता है जितना कि उसने अपने बारे में ज़ाहिर किया है। हम ज़ाते-इलाही के भेद के बारे में सिर्फ़ उन बातों पर ही ईमान रखते हैं जो उसने ख़ुद अपने कलाम में हम पर ज़ाहिर की हैं। जो कुछ हम नहीं समझ सकते उसे हम नहीं छेड़ते।

बाप, फ़रज़ंद और रूह के काम

ताहम हम कलामे-ख़ुदा की रौशनी में हर उक़नूम के बारे में बहुत कुछ कह सकते हैं। हर एक का अपना अपना काम है।

बाप हर चीज़ का सरचश्मा, सबब और मुहर्रिक है।

- काइनात का सरचश्मा

  1 कुरिंथियों 8:6; मुकाशफ़ा 4:11

- इलाही इनकिशाफ़ का सरचश्मा

  मुकाशफ़ा 1:1

- नजात का सरचश्मा

  यूहन्ना 3:16-17

- फ़रज़ंद के कामों का सरचश्मा

  यूहन्ना 5:17; 14:10

फ़रज़ंद दर्जे-ज़ैल काम करता है।

- काइनात की तख़लीक़ और इंतज़ाम

  1 कुरिंथियों 8:6; यूहन्ना 1:3;
  कुलुस्सियों 1:16-17

- इलाही इनकिशाफ़

  यूहन्ना 1:1; 16:12-15; मत्ती 11:27;
  मुकाशफ़ा 1:1

- नजात

  2 कुरिंथियों 5:19; मत्ती 1:21;
  यूहन्ना 4:42

रूहुल-क़ुद्स दर्जे-ज़ैल कामों का ज़रीअ है।

- काइनात की तख़लीक़ और इंतज़ाम का ज़रीअ

  पैदाइश 1:2; ऐयूब 26:13; ज़बूर 104:30

- इलाही इनकिशाफ़ का ज़रीअ

  यूहन्ना 16:12-15; इफ़िसियों 3:5; 2 पतरस 1:21

- नजात का ज़रीअ

  यूहन्ना 3:6; तितुस 3:5; 1 पतरस 1:2

- फ़रज़ंद के कामों का ज़रीअ

  यसायाह 61:1; आमाल 10:38

अर्ज़ है कि क़ारी ख़ुद अल्लाह के कलाम को पढ़ें ताकि वह इस भेद को बेहतर तौर पर समझ सकें।

5

पाँचवीं ग़लतफ़हमी

ईसाई हज़रत ईसा को अल्लाह तआला का बेटा मानते हैं जब कि अल्लाह तआला की कोई बीवी नहीं। न किसी ने उसको जना और न कोई उससे जना गया।

फ़रज़ंद दूसरे उक़नूम का लक़ब है

जो यह एतराज़ करते हैं वह समझते हैं कि हुज़ूर अल-मसीह उन मानों में अल्लाह तआला के बेटे हैं जैसे हम अपने वालिदैन के हैं। हम इन मानों में हुज़ूर अल-मसीह को हरगिज़ हरगिज़ अल्लाह तआला का बेटा नहीं मानते। यह हमारे नज़दीक कुफ़्र है। हम आपको इसलिए ख़ुदा का फ़रज़ंद मानते हैं कि आप ज़ाते-इलाही में तसलीस के दूसरे उक़नूम हैं।

> यह पैग़ाम उसके फ़रज़ंद ईसा के बारे में है। इनसानी लिहाज़ से वह दाऊद की नसल से पैदा हुआ, जब कि रूहुल-क़ुद्स के लिहाज़ से वह क़ुदरत के साथ अल्लाह का फ़रज़ंद ठहरा जब वह मुरदों में से जी उठा। यह है हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह के बारे में अल्लाह की ख़ुशख़बरी।
> (इंजील जलील, रोमियों 1:3-4)

इस लक़ब का सबसे अहम मतलब यही है। यह दीगर कई हवालाजात में भी साफ़ साफ़ बयान किया जाता है (देखिए इंजीले-जलील, मत्ती 14:28-33; 16:16; 21:37-46; 22:41-46; 26:63)।

इंजील जलील के इन हवालाजात से साफ़ ज़ाहिर है कि हुज़ूर अल-मसीह ने अलानिया तौर पर कहा कि आप ख़ुदा के फ़रज़ंद

हैं और ख़ुदा आपका बाप है। इसी वजह से यहूदी आपको क़त्ल करने के दरपै हो गए थे। यहूदियों ने कहा,

> हम तुमको किसी अच्छे काम की वजह से संगसार नहीं कर रहे बल्कि कुफ़र बकने की वजह से। तुम जो सिर्फ़ इनसान हो अल्लाह होने का दावा करते हो। (यूहन्ना 10:33)

हुज़ूर अल-मसीह ने दावा किया कि वह और बाप एक हैं और कि वह उस में से निकल आए हैं। जब कभी उन्होंने ख़ुद को ख़ुदा का फ़रज़ंद या ख़ुदा को अपना बाप कहा तो यहूदियों ने यही समझा कि वह ख़ुद को अल्लाह तआला के बराबर बनाते हैं (यूहन्ना 5:18; 19:4-7), इसी वजह से यहूदियों ने आपको सलीब भी दी। मुलाहज़ा फ़रमाएँ,

> मजलिस ने जमा होकर उसे यहूदी अदालते-आलिया में पेश किया। उन्होंने कहा, …“क्या तू अल्लाह का फ़रज़ंद है?”
>
> उसने जवाब दिया, “जी, तुम ख़ुद कहते हो।”
>
> इस पर उन्होंने कहा, “अब हमें किसी और गवाही की क्या ज़रूरत रही? क्योंकि हमने यह बात उसके अपने मुँह से सुन ली है।”
>
> (इंजील जलील, लूक़ा 22:66-67,70-71)

हुज़ूर अल-मसीह के इस दावे में कि आप अल्लाह तआला के फ़रज़ंद हैं एक मख़फ़ी इशारा था कि आप तसलीस फ़ित-तौहीद के उक़नूमे-सानी होने के बाइस ख़ुदा हैं, और यहूदी राहनुमा यह ख़ूब समझते थे। फिर आपके काम और तालीम भी इसकी तसदीक़ करते थे। मसलन आपने फ़रमाया,

> जिस तरह बाप मुरदों को ज़िंदा करता है उसी तरह फ़रज़ंद भी जिन्हें चाहता है ज़िंदा कर देता है। और बाप किसी की भी अदालत नहीं करता बल्कि उसने अदालत का पूरा इंतज़ाम फ़रज़ंद के सुपुर्द कर दिया है। (यूहन्ना 5:21-22)

अदालत करना और ज़िंदगी बख़्शना इलाही काम हैं। आप दावा करते हैं कि आपको इन कामों को करने का पूरा इख़्तियार हासिल है। यह महज़ दावा ही नहीं था बल्कि आपने अमली तौर पर भी इसका इज़हार किया। मसलन, मरक़ुस 2:5-12 में मरक़ूम है :

> ईसा ने …मफ़लूज से कहा, "बेटा, तेरे गुनाह माफ़ कर दिए गए हैं।"
>
> शरीअत के कुछ आलिम वहाँ बैठे थे। वह यह सुनकर सोच-बिचार में पड़ गए। "यह किस तरह

> ऐसी बातें कर सकता है? कुफ़्र बक रहा है। सिर्फ़ अल्लाह ही गुनाह माफ़ कर सकता है।”
>
> ईसा ने अपनी रूह में फ़ौरन जान लिया कि वह क्या सोच रहे हैं, इसलिए उसने उनसे पूछा, “तुम दिल में इस तरह की बातें क्यों सोच रहे हो? क्या मफ़लूज से यह कहना आसान है कि ‘तेरे गुनाह माफ़ कर दिए गए हैं’ या यह कि ‘उठ, अपनी चारपाई उठाकर चल फिर’? लेकिन मैं तुमको दिखाता हूँ कि इब्ने-आदम को वाक़ई दुनिया में गुनाह माफ़ करने का इख़्तियार है।” यह कहकर वह मफ़लूज से मुख़ातिब हुआ, “मैं तुझसे कहता हूँ कि उठ, अपनी चारपाई उठाकर घर चला जा।”
>
> वह आदमी खड़ा हुआ और फ़ौरन अपनी चारपाई उठाकर उनके देखते देखते चला गया। सब सख़्त हैरतज़दा हुए और अल्लाह की तमजीद करके कहने लगे, “ऐसा काम हमने कभी नहीं देखा!”

यहूदियों के दीनी पेशवा ने दुरुस्त कहा था कि “सिर्फ़ अल्लाह ही गुनाह माफ़ कर सकता है।”

हुज़ूर अल-मसीह इस बिना पर अल्लाह तआला के फ़रज़ंद नहीं कि आप दुनिया में पैदा हुए बल्कि इस बिना पर कि आप तसलीस

फ़ित-तौहीद के दूसरे उक़नूम हैं। आप अज़ल से फ़रज़ंद हैं। यही वजह है कि जब आप ज़मीन पर थे तो आपने ख़ुद को बतौरे-परदेसी ज़ाहिर किया। आप आसमानी हैं जब कि इनसान ज़मीनी हैं। आपका वतन यह दुनिया नहीं, चुनाँचे आपने फ़रमाया,

> तुम नीचे से हो जब कि मैं ऊपर से हूँ। तुम इस दुनिया के हो जब कि मैं इस दुनिया का नहीं हूँ। (यूहन्ना 8:23)

आप बाप से हैं और जैसे बाप अज़ली और अबदी है आप भी अज़ली और अबदी हैं। इसी वजह से आपने यहूदी राहनुमाओं से कहा,

> इब्राहीम की पैदाइश से पेशतर 'मैं हूँ' (यूहन्ना 8:58)

और कि

> मैं और बाप एक हैं। ...जिसने मुझे देखा उसने बाप को देखा है। (यूहन्ना 10:30; 14:9)

इसका मतलब यह है कि जब हम हुज़ूर अल-मसीह को जानते और आप पर ईमान लाते हैं तो हक़ तआला को देखते और उस पर ईमान लाते हैं। दीगर अलफ़ाज़ में, जब हम आपको जो आसमान से हैं और अज़ली हैं देखते हैं तो हमें आप में अल्लाह तआला का

ज़ुहूर नज़र आता है। आप मज़हरे-ख़ुदा हैं और यही फ़रज़ंद का मतलब है।

इनसान बनने का भेद

हुज़ूर अल-मसीह का इनसान बनकर दुनिया में आना एक बहुत बड़ा भेद है। भेद यह है कि फ़रज़ंद की ज़ाते-अक़दस में ख़ुदाए-क़ादिर ख़ुद इनसान बन गया। इसके चंद एक पहलू हैं।

फ़रज़ंद से ज़ाते-इलाही का इनकिशाफ़

इंजीले-शरीफ़ में मरक़ूम है,

> इब्तिदा में कलाम था। कलाम अल्लाह के साथ था और कलाम अल्लाह था। ...कलाम इनसान बनकर हमारे दरमियान रहाइश-पज़ीर हुआ और हमने उसके जलाल का मुशाहदा किया। वह फ़ज़ल और सच्चाई से मामूर था और उसका जलाल बाप के इकलौते फ़रज़ंद का-सा था। (यूहन्ना 1:1,14)

अहले-इसलाम भी हुज़ूर अल-मसीह को “कलिमतु-ल्लाह” यानी ख़ुदा का कलाम कहते हैं। किसी शख़्स का कलाम या मुँह

की बातें उसकी सोच और शख़्सियत ज़ाहिर करती हैं। ख़ुदा की ज़ात भी उसके कलाम यानी तौरेतो-इंजील वग़ैरा से मालूम होती है। और चूँकि अल-मसीह ख़ुदाए-क़ादिर के मुजस्सम और ज़िंदा कलाम हैं इसलिए हम उन पर ग़ौर करने से अल्लाह की उलूहियत के भेद को कुछ न कुछ समझ सकते हैं।

इनसान को ख़ुदा से मिलाने का वाहिद रास्ता

इस में कोई शक नहीं कि ख़ालिक़ और मख़लूक़ में ज़मीनो-आसमान का फ़रक़ है। इन दोनों के दरमियान गुनाह की एक अज़ीम ख़लीज पड़ी है। इनसान इस ख़लीज को उबूर करने नहीं पाता, इसलिए न तो वह हक़ तआला की ज़ाते-अक़दस के क़रीब आ सकता, न जन्नत में दाख़िल हो सकता है। हर एक जहन्नुम में जाने का हक़दार है।

सिर्फ़ एक हल था, यह कि ख़ुदा हुज़ूर अल-मसीह की सूरत में इनसान बन गया ताकि इनसान उसके क़रीब आकर जन्नत में दाख़िल हो सके। न हमारे नेक काम और न ही किसी अज़ीम शख़्सियत हमारी सिफ़ारिश करके हमें जहन्नुम से बचा सकता है बल्कि सिर्फ़ और सिर्फ़ वह जो ख़ुद ख़ुदा का दूसरा उक़नूम है यह काम हमारी ख़ातिर कर सकता था। आप ही ने अपनी जान देकर अपने ऊपर वह सज़ा उठाई जिसके इनसान हक़दार है। यों आपने

इनसान को अदालत से बचने का रास्ता मुहैया किया। जो भी आप पर ईमान लाया उसे नजात हासिल है।

इनसान की ख़ातिर कामिल ख़ुदा और कामिल इनसान

अब अगर कोई यह सवाल करे कि इलाही ज़ात और इनसानी ज़ात का इजतिमा क्योंकर मुमकिन है तो हमारा जवाब यह है कि इनसान में रूह और जिस्म यानी फ़ानी और ग़ैरफ़ानी का बाहमी इजतिमा किस तरह से मुमकिन है? अगर फ़ानी और ग़ैरफ़ानी का इस तरह इनसान में बाहम मिल जाना मुमकिन है तो क्या अबदी ख़ुदा मुजस्सम होने पर क़ादिर नहीं ताकि इनसान के गुनाहों की माफ़ी की राह निकालने के मक़सद को पूरा कर सके? क़ादिरे-मुतलक़ ख़ुदा, तमाम काइनात का ख़ालिक़ो-मालिक अपनी ला-महदूद दानाईओ-पेशबीनी से जो कुछ चाहता है उसे अमल में लाने पर क़ादिर है। अगरचे हम इन बातों को पूरे तौर से समझ नहीं सकते ताहम हमारा इन पर ईमान है। क्योंकि ख़ुदा ने इनको अपने कलामे-पाक में ज़ाहिर किया है।

इंजीले-मुनव्वरा से हमें यह इल्म भी हासिल होता है कि ख़ुदावंद मसीह की इलाही ज़ात और इनसानियत में ऐसा रिश्ता है कि न तो इनसानियत उलूहियत में तबदील होती है और न उलूहियत का

इनसानियत के साथ इख़्तिलात होने का इमकान है। दो फ़ितरतें, इलाही और इनसानी एक ऐसे लासानी और नाक़ाबिले-फ़हम रिश्ते में बँध गई हैं जो बाहम मिलकर एक ज़ात बन गई हैं, जिस में एक ही क़ुव्वते-मुतख़ैयला और क़ुव्वते-इरादा है। यह क़ुव्वते-मुतख़ैयला और क़ुव्वते-इरादा बाहम इनसानी और इलाही दोनों सिफ़ात का मजमुआ है।

हमारा ईमान है कि हुज़ूर ईसा मसीह कामिल इनसान और कामिल ख़ुदा हैं। कामिल इनसान की सूरत में आप बिलकुल बेगुनाह थे और हमेशा ऐसे काम करते थे जो आपके आसमानी बाप को पसंद आते थे। उलूहियत की पूरी मामूरी रखते हुए और ज़िंदगी के बानी होने के बाइस मुमकिन न था कि आप मौत के क़ब्ज़े में रहते। यों ज़िंदगी के शाहज़ादे तीसरे दिन मौत और आलमे-अरवाह की कुंजियाँ अपने हाथ में लिए हुए मुरदों में से जी उठे। मौत पर फ़तहमंद होकर अब आप उन सबको जो आप पर ईमान लाते हैं, मुरदों में से ज़िंदा करके हमेशा के लिए अपने साथ रखेंगे।

इनसान को नजात देने की वाहिद हस्ती

फ़रज़ंद का जो लक़ब हुज़ूर अल-मसीह के लिए इस्तेमाल किया जाता है उसे मुंदरजाए-बाला बयान की रौशनी में समझना चाहिए। उसे किसी सूरत में भी नफ़सानी, दुनियवी और जिस्मानी

मानों में नहीं लेना चाहिए। ख़ुदा फ़रज़ंद अज़ल से ऐसा ही चला आता है और ख़ुदा बाप और ख़ुदा रूहुल-क़ुद्स के साथ ज़ातो-सिफ़ात और अबदियत में बराबर है। उसी के वसीले से सब चीज़ें पैदा हुईं, और जब वक़्त पूरा हो गया तो आप ख़ुदा बाप की मारिफ़त एक औरत से पैदा होने के लिए दुनिया में भेजे गए ताकि आप उस बदन को इख़्तियार करें जो आपके लिए तैयार किया गया था। इंजीले-मुनव्वरा में मरक़ूम है,

> जब मुक़र्ररा वक़्त आ गया तो अल्लाह ने अपने फ़रज़ंद को भेज दिया। एक औरत से पैदा होकर वह शरीअत के ताबे हुआ। (गलतियों 4:4)

आप अपनी जान को फ़िद्या में देकर उनको छुड़वाने के लिए आए जो गुनाह करने की वजह से मौत की सज़ा के मातहत थे। अल्लाह तआला को इनसान से कैसी मुहब्बत है कि वह उसकी ख़ातिर इतना कुछ करने के लिए तैयार था।

> अल्लाह ने दुनिया से इतनी मुहब्बत रखी कि उसने अपने इकलौते फ़रज़ंद को बख़्श दिया, ताकि जो भी उस पर ईमान लाए हलाक न हो बल्कि अबदी ज़िंदगी पाए। क्योंकि अल्लाह ने अपने फ़रज़ंद को इसलिए दुनिया में नहीं भेजा कि वह दुनिया को

> मुजरिम ठहराए बल्कि इसलिए कि वह उसे नजात दे। जो भी उस पर ईमान लाया है उसे मुजरिम नहीं क़रार दिया जाएगा, लेकिन जो ईमान नहीं रखता उसे मुजरिम ठहराया जा चुका है। वजह यह है कि वह अल्लाह के इकलौते फ़रज़ंद के नाम पर ईमान नहीं लाया। (यूहन्ना 3:16-18)